सन 2010 की खास-खास किताबें

यह बात अब पूरे यकीन से कही जा सकती है कि हिंदी का साहित्य-जगत अब काफी समृद्ध होता जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य और साहित्यिक विमर्श के साथ ही सैकड़ों किताबें हर साल ऐसी हिंदी में आती हैं, जिनकी तरफ पाठकों का ध्यान जाता है। बहुतेरी ऐसी भी होती हैं, जिनके न छपने से कोई खास फर्क नहीं पड़ता। बहरहाल, प्रस्तुत है 2010 में प्रकाशित हिंदी की साहित्यिक पुस्तकों में से एक जायजा : हो सकता है, इनमें से कुछ पुस्तकें आपकी नजर से भी गुजरी हों। कुछ को आप शायद अब पढ़ना चाहें। यह एक समृद्ध दुनिया है, जिसमें से आप अपने लिए भी एक कोना खोज सकते हैं। कहीं भी जाइए, अपनी पसंद की किताब साथ ले जाइए और बढ़ाइए अपनी जानकारी। कीजिए अपना मनोरंजन और फिर दूसरों को बताइए कि उन्हें क्या पढ़ना चाहिए। कहानी हो या कविता, उपन्यास हों या यात्रा-वृत्तांत, आलोचना हो या ज्ञान-विज्ञान, किताबें साथ में हों तो आप खुद को अकेला नहीं महसूस कर सकते।

कहानी-संग्रह

इस रचना-वर्ष में प्रकाशित कुछ उल्लेखनीय कहानी-संग्रह हैं : 'मुश्किल काम' (असगर वजाहत), 'गमला' (डॉ. विवेकीराम), 'कितने शीरीं हैं तेरे लब कि' (राजेंद्र राव), 'सावंत आंटी की लड़कियां' और 'पिंक स्लिप डैडी' (गीत चतुर्वेदी), 'अधखाया फल' (आनंद हर्षुल), 'रफ्तार' (महेश दर्पण), 'चोट' (योगेंद्र दत्त शर्मा), 'ऑनलाइन रोमांस' (सुषमा मुनींद्र), 'बाणमूठ' (मुरारी शर्मा) और 'यूटोपिया' (वंदना राग)। प्रेम कुमार और गीतांजलि श्री की प्रतिनिधि कहानियां भी इस साल प्रकाशित हुई हैं। कमलेश्वर द्वारा संपादित 'शताब्दी की कालजयी कहानियां (चार खंड) एक यादगार आयोजन है। कुछ आकर्षक कहानियों के संग्रह हैं – ओमा शर्मा का 'शुभारंभ और अन्य कहानियां', तेजेंद्र शर्मा का 'कब्र का मुनाफा', सुभाष शर्मा का 'भूख तथा अन्य कहानियां'। सुरेंद्र तिवारी ने 'बीसवीं सदी की महिला कलाकारों की कहानियां' 10 खंडों में संपादित कर एक बड़ा काम किया है। इस आयोजन में उन्होंने 260 कहानियां संकलित की हैं। दो खंडों में कामतानाथ की संपूर्ण कहानियां भी प्रकाशित हुई हैं।

उपन्यासों की दुनिया

इस साल प्रकाशित उपन्यासों में क्रांति कनकी की जन्मशती' (रवींद्र वर्मा), अवर्ण महिला कॉन्स्टेबल की डायरी' (नीरजा माधव), 'रेखाएं दुख की' (विष्णु चंद्र शर्मा), 'यही कहीं का घर' (कमल कुमार), 'गोकुल, मथुरा, द्वारिका' (रघुवीर चौधरी), 'सुखफरोश (वीरेंद्र जैन), 'भामती' (उषा किरण खान), 'मिलजुल मन' (मृदुला गर्ग) आदि ध्यान खींचते हैं।
कुछ अन्य पठनीय उपन्यास हैं – 'उफ्फ' (प्रमोद कुमार तिवारी), ग्लोबल गांव के देवता' (रणेंद्र), 'प्रेम की भूत कथा' (विभूति नारायण राय), 'मैंने नाता तोड़ा' (सुषम बेदी), 'बेनीमाधव तिवारी की पतोह' (मधुकर सिंह) और 'वर:मिहिर' (घनश्याम पांडेय), 'टूटने के बाद' (संजय कुंदन) और (पानी बीच मीन पियासी' (मिथिलेश्वर)।

यात्रा-संस्मरण

इस बरस यात्रा पर आधारित कुछ अच्छी किताबें आई हैं। इनमें प्रयाग शुक्ल की 'हेलेन गैनली की नोटबुक' और 'त्रां-दाइम में ट्राम', महेश दर्पण की 'पुश्किन के देस में', रामशरण जोशी की 'अपनों से पास, सपनों से दूर', राकेश भारतीय की 'विज्ञान व नई प्रौद्योगिकी के दुस्तर द्वीपों में' और चमेली जुगरान की 'जान्नू लैन' प्रमुख हैं। महेश दर्पण ने रूसी समाज और जनजीवन को देखा-समझा है तो प्रयाग शुक्ल कला-यात्राओं और देश के कोने-कोने से जोड़ने की कोशिश में दीखते हैं। जोशी की यात्रा में समाज-शास्त्रीय पकड़ है तो राकेश ताइवान की यात्रा अपने ढंग से करा गए हैं। चमेली की यात्रा में आत्मीय चित्र हैं।

कविता संग्रह

इस रचना-वर्ष में कुछ उल्लेखनीय कविता संग्रह हैं : कैलाश वाजपेयी का 'डूबा-सा अनडूबा तारा', लीलाधर मंडलोई का 'महज शरीर नहीं पहन रखा था उसने', सुरेश सलिल का 'भीगी हुई दीवार पर रोशनी', रामदरश मिश्र के संग्रह 'कभी-कभी इन दिनों' और 'हवाएं साथ-साथ हैं', तड़ित कुमार का 'अभी हूं न मैं', पवन माथुर का 'एक शब्द है मेरे पास', बलदेव वंशी का 'इतिहास में आग', मधु शर्मा का 'धूप अभी भी', डॉ. विनय का 'चिड़िया अब नहीं बोलती', बोधिसत्व का 'खत्म नहीं होती बात', गीत चतुर्वेदी का 'आलाप में गिरह', बद्री नारायण का 'खुदाई में हिंसा', अष्टभुजा शुक्ल का 'इसी हवा में अपनी भी दो-चार सांस हैं' और सुदीप बनर्जी का 'उसे लौट आना चाहिए'। ये विविध पीढ़ियों के कवि हैं। समय और मनुष्य के साथ ही प्रकृति को देखने की इनकी अपनी-अपनी नजर है। लेकिन इनसे एक मिला-जुला कविता-विवेक भी बनता है, जो आज के पाठक को रसास्वादित करते हुए नई चेतना से लैस करता है। भाषा के यहां कई स्तर हैं, जो समय के यथार्थ को उधेड़ते ही नहीं, बुनने की जुगत में भी नजर आते हैं। कुछ समग्र भी इस बरस आए हैं। इनमें सुरेश सलिल द्वारा संपादित चयनित 'त्रिलोचन : चुनी हुई रचनाएं', 'कीर्ति चौधरी : समग्र कविताएं' (संपादक : अजित कुमार), 'खिली हुई धूप में' (काव्य-संग्रह : विवेकी राय), 'वीरेंद्र मिश्र : गीत-समग्र' (संपादक : प्रदीप पंत) प्रमुख हैं। नई और पुरानी पीढ़ी के कुछ कवियों के जिन संग्रहों ने अलग से ध्यान खींचा है, वे हैं –'मेरा एक बिम्ब बचा है, (विष्णु चंद्र शर्मा), 'चलता चला जाऊंगा' (विष्णु प्रभाकर), 'बच्चन के साथ क्षण भर' (अजित कुमार द्वारा संपादित), 'जवान होते लड़के का कबूलनामा' (निशांत), 'यात्रा' (रविकांत), 'वजूद' (राजेश रेड्डी) और 'वह फिर आएगी' (बलवीर लोकेश)।

विविध

कवि-कथाकार योगेंद्र दत्त शर्मा पर देवेंद्र शर्मा इन्द्र संपादित 'वह अभी सफर में है', 'सृजन समग्र: उर्मिल सत्यभूषण', 'समकालीनता और साहित्य' (राजेश जोशी), 'भारतीय साहित्य' (मूलचंद गौतम), 'मेरे साक्षात्कार' (चित्रा मुद्गल), 'लगता नहीं है दिल मेरा' व 'और और औरत' (कृष्णा अग्निहोत्री), 'आगे अंधी गली है और '21वीं सदी का पहला दशक' (सुरेश शर्मा के संपादन में प्रभाष जोशी के आलेखों के संग्रह) 'बस्तर लाल क्रांति बनाम ग्रीन हंट' (कनक तिवारी), 'भारतीय दलित और सामाजिक संस्तरीकरण' (रविभूषण चंद्रिकेश) तथा 'शब्द और सत्याग्रह' (प्रेमपाल शर्मा) आदि विविध विषयों पर उल्लेखनीय पुस्तकें हैं। इनसे यह जाहिर होता है कि हिंदी का फलक अब बहुत विस्तृत हुआ है। हर सोच और पीढ़ी के विचारक हिंदी में सक्रिय हैं।

आलोचना में भी बहुत कुछ

हिंदी आलोचना में भी इस साल अनेक महत्वपूर्ण किताबें प्रकाशित हुई हैं। डॉ. नामवर सिंह की चारों किताबें एक साथ युवा आलोचक आशीष त्रिपाठी ने संपादित की हैं। ये हैं : 'हिंदी का गद्य पर्व', प्रेमचंद और भारतीय समाज', 'कविता की जमीन और जमीन की कविता' तथा 'जमाने से दो-दो हाथ'। युवा आलोचक उदयशंकर द्वारा संपादित सुरेंद्र चौधरी का समग्र आलोचना कर्म तीन खंडों में प्रकाशित हुआ है। ये हैं : 'हिंदी कहानी : रचना और परिस्थिति', 'साधारण की प्रतिज्ञा और अंधेरे से साक्षात्कार', 'इतिहास, संयोग और सार्थकता'।

(समीक्षक)